जुलाई, 2015 ■ मूल्य : 30 रुपए

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

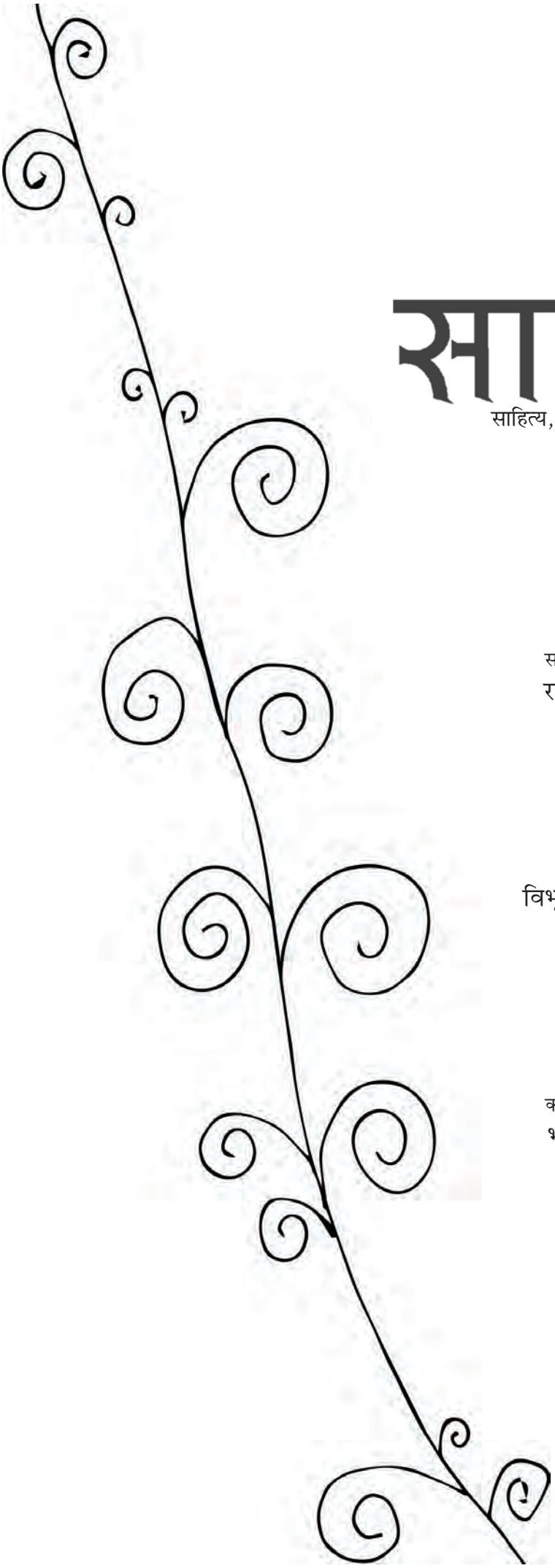

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

वर्ष 32 ❑ अंक 7 ❑ जुलाई, 2015

सलाहकार संपादक
रवीन्द्र कालिया

संपादक
विभूति नारायण राय

कार्यकारी संपादक
भारत भारद्वाज

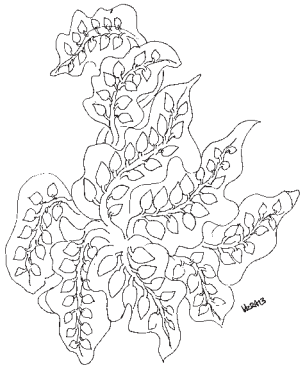

वर्ष 32 ❑ अंक 7 ❑ जुलाई, 2015
RNI पंजीकरण संख्या 40342/83
डाक पंजीयन संख्या ए.एल.जी./63, 2013-2015

संपादकीय कार्यालय :
टी/101, आम्रपाली सिलिकॉन सिटी, सेक्टर-76,
नोएडा-201306 मो. 09643890121

Email : vartmansahitya.patrika@gmail.com
Website : vartmansahitya.com

कला पक्ष : भरत तिवारी
बी-67, एसएफएस फ्लैट्स, शेख सराय-1, नई दिल्ली-110017

आवरण : सारा प्रधान (उम्र : नौ बरस)

सहयोग राशि : एक प्रति मूल्य : 30/-; ☐ वार्षिक : 350/-;
☐ संस्थाओं व लाइब्रेरियों के लिए 500/- ☐ आजीवन : 11000/-
☐ **विदेशों में वार्षिक** : 70 डॉलर।

बैंक के माध्यम से सदस्यता शुल्क भेजने के लिए
वर्तमान साहित्य
चालू खाता संख्या : 85141010001260
IFSC : SYNB0008514,
सिंडीकेट बैंक, रामघाट रोड, अलीगढ़-202002

कृपया राशि भेजने की सूचना तत्काल ईमेल अथवा एसएमएस द्वारा ही भेजें।

सदस्यता से सम्बन्धित सारे भुगतान मनीऑर्डर/ड्राफ़्ट/चैक/बैंक के माध्यम से **वर्तमान साहित्य** के नाम से संपादकीय कार्यालय के पते पर ही भेजे जाएँ। मनीऑर्डर भेजने के साथ ही पत्र द्वारा अपना पूरा पता फोन नं. सहित सूचित करें।

प्रकाशक, मुद्रक, संपादक विभूति नारायण राय की ओर से, रुचिका प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 (9212796256) द्वारा मुद्रित तथा 28, एम.आई.जी., अवन्तिका-I, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से **वर्तमान साहित्य**, संपादक मंडल या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

अंदर की बात

संपादकीय
कबिरा हम सबकी कहैं / *विभूति नारायण राय* 3

आलेख
लाला हरदयाल : सशस्त्र प्रतिरोध के दार्शनिक की ऐतिहासिक उपस्थिति / *प्रो. प्रदीप सक्सेना* 5
साहित्य से निर्वासन अर्थात् साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन / *धर्मवीर यादव 'गगन'* 26

धारावाहिक उपन्यास-2
कल्चर वल्चर / *ममता कालिया* 14

अनुवाद (उर्दू कहानी)
तितलियाँ ढूँढ़ने वाली / ज़ाहिदा हिना 19

अनूदित कविताएं (मलयालम)
सुकन्या 23
अशरफ कल्लौड़ 23
पी. के. गोपी 24
जयलक्ष्मी 24
बी. टी. जयदेवन 25

कहानी
ज़हरवाद / इंदिरा दाँगी 34
दूसरी पारी / ए. असफल 42
लो बजट / प्रज्ञा 46
परिणाम / नीरजा पाण्डेय 52
वापसी / रवि किरण सचदेव 54

कविताएं
शैलेन्द्र शैल 40

मीडिया
क्या सचमुच इतना शक्तिशाली है फ़ेसबुक? /*प्रांजल धर* 59

समीक्षा
ख्वाब की सुनहरी डोर में गुथे आशंकाओं के काले पोत / *श्रुति सुधा आर्या* 64
भारतीय गाँवों की बदहाली का आख्यान / *उमेश चौहान* 67
नागार्जुन का काव्य विवेक / *कमलानंद झा* 72

स्तंभ
रचना संसार / *सूरज प्रकाश* 74
तेरी मेरी सबकी बात /*नमिता सिंह* 77

सम्मति : इधर-उधर से प्राप्त प्रतिक्रियाएं 80

कबिरा हम सबकी कहैं

ऐसी शाम को क्या कहिए जिसमें अलग-अलग पीढ़ियों के कवि अपनी कवितायें पढ़ रहे हों और सभी की कविताओं का स्वर अवसाद, निराशा और विकल्पहीनता से भरा हो। खासतौर से तब जब कि कवि एक ऐसी भाषा के हों जिसमें लिखी जाने वाली कविता इश्क, हुस्न और माशूक़ के प्रतीकों से भरी रहती है। कविता पाठ कराची के कवि दंपति अफजाल अहमद और तनवीर अंजुम के घर पर हो रहा था। सुरुचिपूर्ण ढंग से सजे उनके ड्राइंग रूम में दस-बारह लोग खाने पर इकट्ठे हुए थे और यह स्वाभाविक ही था कि मेरे जैसे दो-तीन को छोड़ कर शेष कवियों वाले इस जमावड़े में शीघ्र ही कविता-पाठ का दौर शुरू हो गया। कुछ गज़लों को छोड़ कर अधिकतर नज़्में थीं। सभी कराची के दु:ख से भरी थीं। गज़लें प्रतीकात्मक थीं पर नज़्में सीधे-सीधे इस दु:ख का बयान कर रही थीं और उनमें पसरी विकल्पहीनता ख़ास तौर से आपका ध्यान आकर्षित करती थी। सब कुछ ऐसा जैसे आप किसी अंधी सुरंग में प्रवेश कर गये हों और दूर तक आशा की कोई किरण न हो।

दस साल बाद कराची आया था, मौका था अपने दो उपन्यासों-'**घर**' और '**तबादला**' के पाकिस्तान में छपे उर्दू संस्करणों के लोकार्पण का। मैंने इस अवसर का उपयोग पाकिस्तानी लेखकों से मिलने-जुलने और वहां के समाज को समझने के लिए किया। एक सप्ताह का समय मुलाक़ातों और खाने-पीने की गहमागहमी में कब बीत गया, पता ही नहीं चला पर इन सबके बीच निराशा के उन स्वरों से साक्षात्कार हुआ जिसका ज़िक्र मैंने ऊपर किया है। हर रोज शाम कोई न कोई कार्यक्रम होता और हर मौक़े पर वक्ताओं की एक बड़ी संख्या पाकिस्तानी राज्य की असफलताओं की लम्बी फ़ेहरिस्त लेकर बैठ जाती। अब वह पीढ़ी मुखर हो रही थी जो पाकिस्तान में ही पैदा हुई है और विभाजन की कड़वी स्मृतियाँ उसके जेहन में नहीं हैं। मैंने पाया कि यह पीढ़ी भारत को बहुत मिले-जुले भाव से देखती है। इसे पूरी तरह से प्रेम नहीं कहा जा सकता है पर उस तरह की घृणा भी नहीं है जिसकी कल्पना भारत में बैठे-बैठे हम करते हैं।

घरों में टेलीविज़न पर दिन रात भारतीय चैनल देखे जा रहे हैं। टैक्सी ड्रायवर से यह पूछने पर कि क्या सिनेमाघरों में भारतीय फिल्में लगती हैं उत्तर मिलता है कि यदि हिंदी फिल्में न चलायें तो हॉल खाली पड़े रह जायेंगे। दूकानों पर बालीवुड़ की हीरोइनों की तस्वीरें उत्तेजक अदाओं के साथ मौजूद हैं। मेरे मेजबान का नाती क्रिकेट का नहीं बल्कि फ़ुटबाल का शौकीन है पर हर प्रमुख भारतीय क्रिकेटर का व्यक्तिगत रिकार्ड उसे याद है पर कभी-